पाठ – 7.1

मध्ययुगीन काव्य

4AUP18

पाठ – 7.1.1

मीराबाई

जीवन परिचय

मीराबाई का जन्म संवत् 1573 में जोधपुर में चोकड़ी नामक गाँव में हुआ था। कम आयु में ही इनका विवाह मेवाड़ के महाराणा कुमार भोजराज के साथ हो गया था। मीरा बचपन से ही कृष्णभक्ति में रुचि लेने लगी थीं। विवाह के थोड़े ही दिन के बाद मीरा बाई के पति का स्वर्गवास हो गया। पति की मृत्यु के बाद इनकी भक्ति–भावना दिन–प्रतिदिन बढ़ती गई। मीराबाई द्वारा कृष्णभक्ति में पद रचना और नाचना–गाना सामंती राज परिवार की परंपराओं के अनुकूल नहीं था। राज परिवार ने कई बार मीराबाई को विष देकर मारने की कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हो सका। घर वालों के इस प्रकार के व्यवहार से परेशान होकर वह द्वारका चली गईं और जीवन पर्यंत वहीं रहीं।

मीरा की कविता में कृष्ण भक्ति और प्रेम का चरम उत्कर्ष मिलता है। उनकी कविता में ब्रज और मेवाड़ी दोनों का पुट मिलता है। यहाँ दिए गए पदों में उन्होंने अपने कृष्ण प्रेम का वर्णन किया है। मीरा के कृष्ण प्रेम की उत्कटता इन पदों मे देखी जा सकती है। व्यक्तिगत प्रेम की इतनी उदात्त छवियाँ मध्यकालीन काव्य में दुर्लभ हैं।

पद

पग घुँघरु बाँध मीरा नाची रे।
मैं तो मेरे नारायण की आपहि हो गई दासी रे।
लोग कहै मीरा भई बावरी न्यात कहै कुलनासी रे।।
विष का प्याला राणाजी भेज्या पीवत मीरा हाँसी रे।
'मीरा' के प्रभु गिरिधर नागर सहज मिले अविनासी रे।।

मैं तो साँवरे के रंग राची।
साजि सिंगार बाँधि पग घुंघरू, लोक–लाज तजि नाची।।
गई कुमति, लई साधुकी संगति, भगत, रूप भै साँची।
गाइ गाइ हरिके गुण निस दिन, कालब्याल सूँ बाँची।।
उण बिन सब जग खारो लागत, और बात सब काँची।
मीरा श्रीगिरधरन लाल सूँ, भगति रसीली जाँची।।

बसो मोरे नैनन में नंदलाल।
मोहनी मूरति सांवरि सूरति, नैणा बने बिसाल।
अधर सुधारस मुरली राजत, उर बैजंती–माल।।
छुद्र घंटिका कटि तट सोभित, नूपुर सबद रसाल।
मीरा प्रभु संतन सुखदाई, भगत बछल गोपाल।।

पायो जी म्हे तो राम रतन धन पायो।।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो।।
जनम जनम की पूंजी पाई, जग में सभी खोवायो।।
खायो न खरच चोर न लेवे, दिन–दिन बढ़त सवायो।।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो।।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, हरस हरस जस गायो।।

शब्दार्थ :–

बावरी – पगली; **न्यात** – नाते रिश्ते वाले; **कुलनासी** – कुल का नाश करने वाला; **नागर** – नगर में रहने वाला; **अविनासी** – जिसका विनाश न हो; **कुमति** – बुरी मति; **कालब्याल** – काल रूपी साँप; **काँची** – कच्चा; **उर** – हृदय; **बछल** – वत्सल; **म्हे** – मैं; **अमोलक** – अमूल्य; **खेवटिया** – नाव खेने वाला; **भवसागर** – संसार रूपी समुद्र; **हरस** – खुश, प्रसन्न।

यह भी पढ़िए

मीरा ने एक पद होली के बारे मे भी लिखा है उसे देखिए–
होरी खेलत हैं गिरधारी

मुरली चंग बजत डफ न्यारो
संग युवती ब्रज नारी
होरी खेलत हैं गिरधारी
चन्दन केसर छिरकत मोहन
अपने हाथ बिहारी
भरि–भरि मूठ लाल चहुँ ओर
देत सबन पे डारि
होरी खेलत हैं गिरधारी

नीचे दी गई नज़ीर अकबराबादी की कविता मीरा के लगभग 300 साल बाद लिखी गई थी। उन्होंने होली पर अनेक कविताएँ लिखीं हैं। नज़ीर उर्दू के कवि थे और उनकी कविताओं में हिन्दू मुस्लिम सौमनस्य काफी देखने को मिलता है...

होली

जब खेली होली नंद ललन हँस हँस नंदगाँव बसैयन में।
नर नारी को आनंद हुए खुशवक्ती छोरी छैयन में।।
कुछ भीड़ हुई उन गलियों में कुछ लोग ठठ्ठ अटैयन में ।
खुशहाली झमकी चार तरफ कुछ घर–घर कुछ चौपय्यन में।।
डफ बाजे राग और रंग हुए, होली खेलन की झमकैयन में।
गुलशोर गुलाल और रंग पड़े, हुई धूम कदम की छैयन में।।

———————————